"स्वावलंबी शिक्षण हेच आमचे ब्रीद" – कर्मवीर

रयत शिक्षण संस्थेचे,

राजर्षी छत्रपती शाहू महाविद्यालय,

कदमवाडी रोड, कोल्हापूर – ४१६ ००३ (महाराष्ट्र)

संस्थापक :

पद्मभूषण डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील डी. लीट.

स्थापना : १९६१

प्राचार्य,

डॉ. व्ही. के. घाटे एम. ए., पीएच. डी.

कार्यालय : ६५४६५८

निवास : ६५४६०८

जा. नं. :

दिनांक 26 / 6 / १९९६

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु.कल्पना दत्तात्रय पाटील ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्.(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध "देवेश ठाकुर के "अन्ततः" उपन्यास का अनुशीलन" मेरे निर्देशन में सफलता-पूर्वक पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है। इसमें शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है। कु.कल्पना दत्तात्रय पाटील के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर।
दिनांक : 26 JUN 1996

(डॉ. व्ही. के. घाटे)
शोध निर्देशक

प्रमाणपत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु-शोध-प्रबन्ध को परीक्षणार्थ उचित किया जाए।

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

कोल्हापुर।
दिनांक : 26 JUN 1996

प्रज्ञापन

यह लघु - शोध - प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्.के लघु-शोध-प्रबन्ध. के रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर।
दिनांक : 26 JUN 1996

Patil.
शोधछात्रा
कु. कल्पना दत्तात्रय पाटील

'प्राक्कथन'

प्राक्कथन

उपन्यास गद्य-साहित्य की सर्वाधिक सशक्त एवं विशाल विधा है। इसमें जीवन का सर्वांगिण चित्रण होता है, इसीलिए उपन्यासकार को विस्तृत कथावस्तु के माध्यम से अपनी कला प्रदर्शन का पूर्ण अवसर मिलता है। मानव जीवन और कल्पना का समन्वित चित्रण करने से उपन्यास का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं लोकप्रिय हो गया है। उपन्यासकार अपनी कृति में स्त्री-पुरूषों के सम्बन्धों, विचारों, अन्तर्वेगों, सुख-दुःखों और संघर्ष आदि का चित्रण करते हुए जीवन की विभिन्न समस्याओं के प्रति अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासकारों ने आधुनिक भारतीय जीवन दर्शन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। जिन समस्याओं को इन लेखकों ने उजागर किया उन्हें पढ़ते समय पाठक को लगता है कि हमारी अपनी समस्याएँ ही इसमें चित्रित हैं। आधुनिक उपन्यासकारों की शृंखला में प्रगतिचेता साहित्यकार एवं प्रखर समीक्षक डॉ.देवेश ठाकुर का नाम अपना विशेष महत्त्व रखता है।

प्रेरणा :-

एम.ए.में पढ़ते समय उपन्यास सम्राट प्रेमचन्दजी का "गबन" तथा हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का "बाणभट्ट की आत्मकथा" जैसे श्रेष्ठत्तम उपन्यासों ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया जिससे उपन्यास पढ़ने की मेरी रूची में वृध्दि हुई। आगे चलकर गर्मियों के दिनों में उपन्यास साहित्य को पढ़ना आरंभ किया। उस वक्त डॉ.देवेश ठाकुर कृत "काँचघर" उपन्यास के कथ्य और शिल्प ने मुझे बहुत ही आकर्षित किया। अतः मैने देवेशजी के एक-एक उपन्यास को पढ़ना आरम्भ किया। आधुनिक मानव जीवन अनेक जटिल समस्याओं से घेरा हुआ है। इसका वास्तव चित्रण देवेशजी की रचनाओं में मिलता है; जिसने मुझे झकझोर दिया और संघर्षमय मानव जीवन के प्रति इसी आस्था ने ही मुझे प्रस्तुत शोधकार्य के लिए प्रेरित किया। अतः मैने तय किया कि मैं एम.ए.के पश्चात् डॉ.देवेश जी की रचना पर ही एम्.फिल्. करूँगी। मैंने मेरे परम श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.पी.एस.पाटीलजी तथा

शोध-निर्देशक डॉ.व्ही.के.घाटेजी से विचार विमर्श करके डॉ.देवेश ठाकुर के "अन्ततः" उपन्यासपर अपना शोधकार्य करना आरम्भ किया।

देवेशजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अब तक निम्नांकित शोध-कर्ताओं ने एम्.फिल्. तथा पीएच.डी. के लिए शोध-कार्य किये हैं -

(अ) पीएच.डी :-

१. "डॉ.देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य"
डॉ.पांडुरंग पाटील (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर १९९२)

२. "हिन्दी उपन्यासों में प्रयोगधर्मिता : देवेश ठाकुर के विशेष संदर्भ में"
कुमारी कमल चौरसिया (डॉ.हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय,सागर १९९२)

३. "देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व कृतित्व - एक अनुशीलन"
आत्माराम नारायण दामिलकर (नागपुर विश्वविद्यालय,१९९३)

(ब) एम.ए.तथा एम्.फिल :-

१. "देवेश ठाकुर का उपन्यास साहित्य"
कु.गीता डानियल (नागपुर विश्वविद्यालय,१९८५)

२. "देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याएँ - एक अनुशीलन"
प्रा.नंदकुमार रामचंद्र रानभरे (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर १९९०)

३. "देवेश ठाकुर के उपन्यास : मध्यवर्ग की समस्याओं का संदर्भ : "जनगाथा" के विशेष संदर्भ में"
वेदना जैन (आगरा विश्वविद्यालय, १९९०)

४. "उपन्यासकार देवेश ठाकुर"
कु.संगीता व्यास (उस्मानिया विश्वविद्यालय,हैदाबाद १९९०-९१)

५. "देवेश ठाकुर के "भ्रमभंग" उपन्यास का अनुशीलन"
सौ.माधवी संजय बागी (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर १९९५)

६. "देवेश ठाकुर के "प्रिय शबनम" उपन्यास का अनुशीलन"
श्री.सुनिलकुमार बापूराव बनसोडे (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर १९९५)

७. "देवेश ठाकुर के "इसीलिए" उपन्यास का अनुशीलन"
श्री.आर.एस.शिरगांवकर (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर १९९४)

८. "देवेश ठाकुर के "अपना अपना आकाश" उपन्यास का अनुशीलन"
कु.गीता शंकरराव भोसले (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर १९९५)

९. "देवेश ठाकुर के "जनगाथा" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ"
श्री.रामचंद्र लोढे (शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर १९९५)

डॉ.देवेश ठाकुर के "अन्ततः" उपन्यास को लेकर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। इसलिए मैंने अनुसंधान के लिए " "अन्ततः" उपन्यास का अनुशीलन" इस शीर्षक को चुना है। जिज्ञासा हर खोज की जननी है। इसी जिज्ञासा को लेकर ही मैंने अपना कार्यारंभ किया। तब जिन प्रश्नों का जवाब प्राप्त करने के लिए मैं यह लघु-शोध कार्य पूरा करने में व्यग्र और व्यस्त रही, वे इस प्रकार है -

१. उपन्यासकार डॉ.देवेशजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व किसतरह का है?
२. उपन्यास का वस्तुविन्यास क्या है ?
३. क्या उपन्यास का शीर्षक सार्थक है ?
४. क्या नायिका वसुधा आधुनिक शिक्षित नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं ?
५. क्या देवेश ठाकुर महानगरीय जीवन की समस्याओं को अभिव्यक्ति देने में सफल हुए है ?
६. उपन्यास की भाषा शैली की क्या विशेषता है ?

मैंने इन प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में उपसंहार में दिए है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत विषय को निम्न अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय : "डॉ.देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

इसके अंतर्गत मैंने डॉ.देवेश ठाकुर का जीवन परिचय, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, विवाह, संतान, साहित्य निर्माण एवं पुरस्कार तथा उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। देवेशजी सीधे-साधे, सरल, भावुक, संवेदनशील, अध्यवसायी, संघर्षशील, दृढ़निश्चयी, महत्त्वकांक्षी, प्रगतिकामी एवं जिन्दादिल दोस्त है। उनके कृतित्व के अन्तर्गत रचनाधर्मी साहित्यकार, उपन्यासकार, प्रगतिशील समीक्षक, सुदी सम्पादक, बाल-साहित्य के प्रणेता, भावुक रोमानी कवि आदि पक्षों का विवेचन किया है और देवेशजी की साहित्यिक कृतियों का नाम निर्देश किया है। इसके साथ ही उनके साहित्यिक सम्मान पर प्रकाश डाला है।

द्वितीय अध्याय : "अन्ततः" उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा"

प्रस्तुत अध्याय में "अन्ततः" उपन्यास की कथावस्तु का समीक्षात्मक विवेचन किया है। उपन्यास की कथावस्तु का परिचय देकर उसकी समीक्षा की है तथा आधुनिक शिक्षित नारी की विवशताओं एवं स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का चित्रण किया है। साथ-साथ शीर्षक की सार्थकता का विवरण भी अध्याय के अन्त में दिया है।

तृतीय अध्याय : "अन्ततः" उपन्यास के पात्र और चरित्र-चित्रण"

उक्त अध्याय के अन्तर्गत मैंने उपन्यास के प्रमुख पात्र तथा उनकी चरित्रगत विशेषताओं का विवेचन किया है। विशेष रूप में उपन्यास की नायिका वसुधा एक मध्यवर्गीय शिक्षित नारी है उसकी परिस्थिति तथा परिवेश का वर्णन किया है। पंकज पसरीचा का चित्रण आदर्श चरित्र के रूप में हुआ है। अन्य पात्रों में राघवन, शालिनी और सुभाष का विवेचन प्रस्तुत किया है। इन पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को चरित्र-चित्रण की प्रणालियों एवं विशेषताओं के आधारपर प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय : "अन्ततः" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ"

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत मैंने "अन्ततः" में चित्रित अनेकविध समस्याओं का विवेचन किया है। जिसमें नारी समस्या, स्त्री-पुरूष सम्बन्ध, सेक्स समस्या, प्रेमविवाह समस्या, अन्तर्जातीय विवाह समस्या, अर्न्तद्वन्द्व, व्यवस्था विद्रोह, होटल-क्लब संस्कृति, अकेलेपन की समस्या, जीवन मूल्यों का विघटन, अर्थ की समस्या, अन्धानुकरण, आवास की समस्या, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं का विवेचन किया है।

पंचम अध्याय : "अन्ततः" उपन्यास का प्रस्तुति शिल्प"

"प्रस्तुति-शिल्प" के अन्तर्गत भाषा तथा शैली का शिल्पगत अध्ययन प्रस्तुत किया है। भाषा के विवेचन में शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप, भाषा सौन्दर्य के साधन, शब्दशक्तियाँ, प्रतीक, बिम्ब, मुहावरें, सूक्तियाँ, वाक्य-विन्यास आदि प्रकारों का साधार अध्ययन प्रस्तुत किया है।

शिल्प के अंतर्गत शैली के स्वरूप का विवेचन करके "अन्ततः" में प्रयुक्त विविध शैलियों का मनोविश्लेषणात्मक, विवरणात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, विश्लेषणात्मक, नाटकीय, पूर्व-दिप्ती, चेतना-प्रवाह, डायरी, सांकेतिक, व्यंग्यात्मक, विसदृश्य, सिनेरिया, एकालाप आदि शैलियों का सोदाहरण अध्ययन प्रस्तुत किया है।

उपसंहार :-

अध्यायों के विवेचन से निकाले गये निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में उपसंहार में दिये हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूची :-

इसके अन्तर्गत ग्रंथ तथा समीक्षा ग्रंथों की सूची दी है।

ऋण-निर्देश :-

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध की पूर्ति का श्रेय मैं श्रध्देय गुरूदेव डॉ.व्ही.के.घाटेजी तथा डॉ.पी.एस.पाटीलजी को देना ही श्रेयस्कर मानती हूँ। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी आपने पग-पग पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा निर्देशन किया। आपके उदार एवं आत्मीय मार्गदर्शन से ही मैं इस शोधकार्य की अंतीम मंजिल तक पहुँच सकी हूँ। आपके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दों में प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है। आपकी प्रेरणा स्नेह और आशीर्वाद की मैं निरन्तर अभिलाषी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष श्रध्देय डॉ.मौरे जी तथा डॉ.अर्जुन चव्हाणजी के सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे परम पूज्य माता-पिता जो अपनी सेवा करने का अवसर दिये बिना हम सबको बचपन में ही छोडकर इस दुनिया से हमेशा के लिए चले गए है, जिनके आशीर्वाद से कष्टों का सामना करके हम जीवन में आगे बढ़ रहे हैं। आपके चरणों में मेरा यह संकल्प अर्पित है।

मेरे आदरणीय भैया श्री भरत पाटील की प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहयोग तो मेरे लिए जिंदगीभर की देन है। अतः मैं आपके ऋण में रहना ही पसंद करूँगी। बडे भैया विजय पाटील, भाभियाँ, बड़ी बहने तथा जिजाजी के आशिर्वाद तो सदैव मेरे साथ रहे हैं जिनके बिना मेरे जीवन का हर कार्य मुझे अधूरा महसूस होता है। मेरे परिवार के सभी छोटे तथा बड़े सदस्यों का सहयोग मुझे हमेशा मिलता रहा है। अतः इनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

इस लघु-शोध प्रबन्ध का टंकन कोल्हापुर के श्री मिलिंद भोसलेजी के ऐश्वर्या झेरॉक्स सेंटर ने बड़ी लगन से किया है। अतः मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ।

इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरे स्वजनों श्री किरण पाटोळे, मोहन सावंत,

प्रा.सुनिल बनसोडे, राम लोंढे, अरूण गंभिरे, श्रीमती ज्योति पाटील, कु.प्रतिभा चिले, सुजाता किल्लेदार, कु.गीता भोसले आदि ने मेरी सहायता की है। इसलिए मैं उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध को सम्पन्न बनाने में जिनसे भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है उन सभी के प्रति मै हृदय से कृतज्ञ हूँ।

मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोधकार्य में किया है।

इस कृतज्ञता-ज्ञापन के साथ मैं अपना यह लघु-शोध-प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ पाठकों तथा विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

Patil

कोल्हापुर
दि. २६।६।१९९६

शोध-छात्रा
(कु.कल्पना दत्तात्रय पाटील)

'अनुक्रमणिका'

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन :-

प्रथम अध्याय : "डॉ.देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।" १ से १८

१:१ जीवन वृत्त।

१:२ व्यक्तित्व।

१:३ कृतित्व।

१:४ निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : "अन्ततः" उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा।" १९ से ४०

२:१ कथावस्तु का स्वरूप।

२:२ कथावस्तु के गुण।

२:३ कथावस्तु का महत्त्व एवं विशेषताएँ।

२:४ अभिव्यक्ति के प्रकार।

२:५ "अन्ततः" उपन्यास की कथावस्तु।

२:६ कथावस्तु की समीक्षा।

२:७ शीर्षक की सार्थकता।

२:८ निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय : "अन्ततः" उपन्यास के पात्र और चरित्र-चित्रण।" ४१ से ६४

३:१ चरित्र चित्रण का स्वरूप।

३:२ चरित्र-चित्रण का महत्त्व।

३:३ "अन्ततः" के पात्र।

३:४ अन्य पात्र।

३:५ निष्कर्ष।

चतुर्थ अध्याय : "अन्ततः" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ। " ६५ से ९२

४:१ नारी समस्या।

४:२ स्त्री-पुरुष सम्बन्ध।

४:३ सेक्स की समस्या।

४:४ अन्तर्द्वन्द्व।

४:५ असफल प्रेमविवाह।

४:६ अन्तर्जातीय विवाह की समस्या।

४:७ संस्कृति एवं परिवेश के प्रति विद्रोह।

४:८ होटल-क्लब संस्कृति।

४:९ जीवन-मूल्यों का विघटन।

४:१० अकेलेपन की समस्या।

४:११ अन्धानुकरण।

४:१२ अर्थ की समस्या।

४:१३ भ्रष्टाचार।

४:१४ आवास की समस्या।

४:१५ जाति श्रेष्ठता की समस्या।

४:१६ निष्कर्ष।

पंचम अध्याय : "अन्ततः" उपन्यास का प्रस्तुति शिल्प। ९३ से १३७

५:१ शिल्प-विधि : स्वरूप।

५:२ प्रस्तुति शिल्प से तात्पर्य।

५:३ भाषा।

५:४ शैली।

५:५ निष्कर्ष।

उपसंहार १३८ से १४७

संदर्भ-ग्रंथ सूची। १४८ से १५९

-o-o-o-o-o o-o-o-o- o-o-